प्राचीन भारत में सामाजिक व्यवस्था–वैदिक काल के संदर्भ में

डॉ0 पवित्र कुमार पवन

प्रारम्भ से ही भारत अनेकानेक जातियों एवं संस्कृतियों का आश्रय स्थल रहा है। इन सहस्त्राब्दियों के अवान्तर में भारतीय समाज विभिन्न प्रकार के प्रभावों के संपर्क में आया, जिसके फलस्वरूप भारतीयों को अविच्छिन्न रूप में परिवर्तित होती हुई परिस्थितियों के सापेक्ष स्वतः को सहजता के साथ ढालना सीखना पड़ा। कोई भी समाज स्थिर नहीं रहता है और भारतीय समाज भी इस सत्य का अपवाद नहीं था। समाज को जिस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और जिस ढंग से उसका प्रत्युत्तर देना पड़ता है, उसी के अनुसार परिवर्तन की गति भी परिवर्तित होती रहती है, परन्तु यदि किसी समाज को उसके अनेक शताब्दियों के जीवन की पृष्ठभूमि में मूल्यांकित किया जाय तो यह परिवर्तन स्पष्टतया परिलक्षित होता है और बौद्ध धर्म के उद्‌भव की पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुये हमें परिवर्तन के इसी नैसर्गिक सिद्धान्त को ध्यान में रखना चाहिए।